

---

# Hayavadana Ashtakam

हयवदनाष्टकम्

## Document Information

---

Text title : Hayavadana Ashtakam

File name : hayavadanAShTakam.itx

Category : vishhnu, vAdirAja, vishnu, aShTaka

Location : doc\_vishhnu

Author : vAdirAjayati

Proofread by : Uma Mahesh, Revathy R.

Latest update : May 24, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

May 24, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

हयवदनाष्टकम्



दासस्य मे शिरसि हस्तसहस्रपत्रं  
श्रीशार्पयेश वरदेश्वर वाजिवक्र ।  
व्यासादिमूर्तिशतशोभित मे प्रसीद  
पाशं विखण्डय भवाभिधमम्बजाक्ष ॥ १ ॥

दासस्य मे शिरसि पादलसत्सरोजं  
श्रीशार्पयाऽऽशु निजभूषणभूषणं ते ।  
आशां विनाशय भवत्स्मरणप्रतीपान्  
दोषांश्च दूरय भवाव्यय मेऽन्तरङ्गे ॥ २ ॥

संसारदावशिखया परितप्यमानः  
संसेवकस्तव तुरङ्गमतुङ्गवक्र ।  
संशद्धमध्वहृदयाजगराजहंस  
कं साधयामि शरणं वरदं विना त्वाम् ॥ ३ ॥

पञ्चात्मकश्रुतिनिगूहकदानवेन्द्र-  
पञ्चत्वदायक रमाञ्चितपादपद्म ।  
सिञ्च त्वदङ्गपरिपावितपापभेद-  
चुञ्चद्विपद्मपरिलम्बिसुधाप्रवाहैः ॥ ४ ॥

नाहं वृणोमि तव पाददिनेशसेवां  
मोहान्धकारनिकरक्षयदां विनाऽन्यत् ।  
व्यूहं सतां समवलम्ब्य भवच्चरित्र-  
व्याहारतृप्तकरणं कुरु किं बहुक्त्या ॥ ५ ॥

किं बन्धनैः कथय बन्धुजनैर्मुरारे  
किं भारभूतकटकादिविभूषणैर्वा ।  
अम्भस्सु मग्नकरणस्य भवाम्बुराशोः  
किं भङ्गशीलघनभूवनाद्युपायैः ॥ ६ ॥

उत्फुल्लपद्मदलनेत्र तुरङ्गवक्र  
रत्नौघचित्रतिलकारुणमञ्जुलोष्ठ ।  
विस्तीर्णवक्षसि विराजितभूरिहार  
वृत्तातिदीर्घकरकञ्च कृताखिलार्थ ॥ ७ ॥

लक्ष्मीनिवास तनुकोमलमञ्जुमध्य  
लक्ष्यत्रिवल्युदरनाभिसरस्सरोज ।  
रत्नाग्यमेखल रणच्चरणाब्जभूष  
भृत्यं विलोकय दयाद्रदृशाऽन्वहं माम् ॥ ८ ॥

इत्यष्टकेन हयकन्धरमिन्दिरेशं  
रक्तात्मपादतलरञ्जितदिव्यदेशम् ।  
तत्पादपद्मकृतमानसवादिराज-  
प्रोक्तेन योऽर्चयति तस्य भवेत्प्रियोऽसौ ॥ ९ ॥

इति श्रीमद्वादिराजपूज्यचरणविरचितं  
हयवदनाष्टकं समाप्तम् ।  
भारतीरमणमुख्यप्राणान्तर्गत श्रीकृष्णार्पणमस्तु ।

Proofread by Uma Mahesh

---

—  
*Hayavadana Ashtakam*

pdf was typeset on May 24, 2024

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

